“पशु शल्य चिकित्सा एवं प्रसूतिशास्त्र” विषय पर 6 दिवसीय रिफ्रेशर पाठ्यक्रम के समापन

बरेली, 19 जनवरी। पशुचिकित्साधिकारियों के लिये पशु रोगों से सम्बन्धित बहुत सी चुनौतियां हैं जिसके समाधान के लिए रिफ्रेशर कोर्स की आवश्यकता है। ऐसे में यह पाठ्यक्रम काफी सहायक होते हैं क्योंकि इन पाठ्यक्रमों में नवीन जानकारियों के साथ-साथ तकनीकों का प्रदर्शन भी कराया जाता है। उपरोक्त विचार केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा के पूर्व निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल ने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में शल्य चिकित्सा एवं पशु पुनरूत्पादन विभाग द्वारा ”पशु शल्य चिकित्सा एवं प्रसूतिशास्त्र“ विषय पर 6 दिवसीय रिफ्रेशर पाठ्यक्रम के समापन अवसर पर व्यक्त किये। यह पाठ्यक्रम उत्तर पद्रेश पशु चिकित्सा परिषद द्वारा प्रायोजित किया गया तथा इसमें उत्तर प्रदेश के 10 पशुचिकित्साधिकारियों ने भाग लिया।

समापन अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा के पूर्व निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल कहा कि आज पशुओं में विभिन्न प्रकार के रोगों के निदान के लिए आधुनिक जानकारी होना अति आवश्यक है और उसके लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित चलाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में कार्य करने के लिए हमें अपने ज्ञान को और बढ़ाना होगा साथ ही साथ नवीन तकनीकों को भी अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि शल्यचिकित्सा एवं प्रसूति विज्ञान में अनेक तकनीक एवं नैदानिक विकसित किये गये हैं। जिसके लिए सही ज्ञान एवं सही प्रयोग की नितांत आवश्यकता है और इसी जानकारी इन रिफ्रेशर कोर्स द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अंत में उन्होनें प्रशिक्षण के सफल आयोजन के लिए सभी संकाय सदस्यों को बधाई दी।

संस्थान के संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डा. महेश चन्दर ने कहा कि प्रशिक्षण बहुत जरूरी है क्योंकि इससे हमें नयी नयी जानकारी सीखने को मिलती है साथ ही आधुनिक तकनीकों का भी ज्ञान होता है उन्होंने पशुचिकित्साधिकारियों का आव्हान किया कि वे भी यहाँ से अर्जित ज्ञान का प्रयोग अपने-अपने क्षेत्रों जाकर प्रयोग करें तथा अन्य पशुचिकित्साधिकारियों को भी इस ज्ञान का लाभ करायें जिससे वे पशुपालक हित में कार्य कर सकें।

शल्य चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डा. अमर पाल ने बताया कि इस 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पशुचिकित्साधिकारियों को व्याख्यान एवं प्रयोगात्मक दोनों रूपों में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गयी।

इस अवसर पर पशु पुनरूत्पादन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. हरेन्द्र कुमार ने कहा कि इस दौरान पशुओं में बांझपन, गर्भपात समस्या तथा फीटल लुबरेकटर एवं प्रसूति विज्ञान से जुड़ी जानकारी एवं प्रयोगात्मक परीक्षण कराये गये।

कार्यक्रम का संचालन शल्य चिकित्सा विभाग के डा. अभिषेक सक्सेना द्वारा किया गया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा. दीपक कुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर डा. प्रकाश किंजवेडकर, डा. अभिजीत पावडे, डा. एस. महमूद, डा. एस.के. श्रीवास्तव, डा. एस.के. घोष, डा. एम. हक, डा. रेखा पाठक सहित विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे